नाम – **साकिरा**
शोध–निर्देशक – **प्रो0 अब्दुल बिस्मिल्लाह**
विभाग – **हिन्दी**
विषय – **राही मासूम रज़ा और पॉपुलर कल्चर**

शोध–सार

वर्तमान युग में साहित्यक एवं सांस्कृतिक विमर्श के अन्तर्गत संस्कृति के अनेक रूपों को समझने–समझाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके चलते उपभोक्तावादी संस्कृति – जो पापुलर कल्चर का ही एक रूप है, जैसे पदबंध आज के सांस्कृतिक विमर्श में प्रमुखता के साथ प्रचलन में आ गए हैं। अतः उत्तर–आधुनिक समय में 'पॉपुलर कल्चर' एक नये विमर्श के रूप में उभर कर आया है।

संस्कृति के रूपों में जो विविधता दिखलाई पड़ती है उसे साहित्य एवं साहित्येतर कलाओं में सहज ही देखा जा सकता है। आभिजात्य संस्कृति और जन–संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में संस्कृति को समझने के प्रयास आरम्भ से ही किए जा रहे हैं । वर्तमान समय में संस्कृति के भीतर जो सांस्कृतिक निर्मितियाँ और परिवर्तन हुए हैं, उनमें सूचना तंत्र, मीडिया, फिल्म, विज्ञापन, तकनीक आदि साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। वास्तव में इन्हीं के द्वारा उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण और उससे प्रभावित संस्कृति का निर्माण सम्भव हुआ है ।

राही मासूम रज़ा के साहित्य एवं साहित्येतर रचनाओं में इस बदलती संस्कृति के अन्तर्गत पॉपुलर कल्चर के चिन्हों को देखा जा सकता है। पॉपुलर कल्चर का औद्योगीकरण, भूमण्डलीकरण, बाजारवाद से गहरा सम्बन्ध है। इसमें लगातार स्थान एवं काल के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं। ये परिवर्तन अपने स्वरूप में बहुआयामी हैं तथा विभिन्न दृष्टिकोणों एवं मूल्यों से जुड़े हुए हैं। वास्तव में पॉपुलर कल्चर संस्कृति उद्योग के माध्यम से अपना स्वरूप ग्रहण करता है। इस संस्कृति का मूलभाव है उच्च संस्कृति की जड़ता और यान्त्रिकता का विरोध। यह अपने में धर्मनिरपेक्षता, क्षणिकता और नश्वरता आदि को समेटे रहती है। पॉपुलर कल्चर में कला केवल मनोरंजन ही नहीं, अपितु एक शक्ति के रूप में भी अभिव्यक्ति पाती है।

राही मासूम रज़ा के साहित्येत्तर लेखन तथा फिल्मों और धारावाहिकों में पॉपुलर कल्चर के चिन्हों को देखा जा सकता है। राही ने जिन फिल्मों के लिए कथा, पटकथा और संवाद लिखे, उनमें राष्ट्रीय स्तर की गम्भीर समस्याओं को उन्होंने पॉपुलर रूप में दिखलाया। उन्होंने 'जेन्टलमैन', 'आखिरी रास्ता', 'सितमगर', 'मैं तुलसी तेरे ऑगन की', 'बैराग', जिन्दगी एक जुआ, 'आइना', डिस्को डांसर, 'कंमाडो' इत्यादि फिल्मों में ऐसे तत्वों को रेखांकित किया है जो जनता में लोकप्रिय हो सके।

राही मासूम रज़ा ने धारावाहिक 'महाभारत' के लिए संवाद लिखे। उन्होंने 'नीम का पेड़' नामक धारावाहिक भी लिखा। महाभारत पौराणिक कथा पर आधारित है और 'नीम का पेड़' समकालीन समस्याओं पर केन्द्रित। धारावाहिक मूलतः नाटक के रूप में प्रस्तुत होने वाली कथा है, जिसे कड़ियों में प्रसारित किया जाता है। यह टेलीविजन की विधा है और टेलीविजन

अपने स्वरूप में पॉपुलर कल्चर के औज़ार के रूप में काम करता है। इसके पीछे एक सुनिश्चित आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया काम करती है। यह निर्माताओं के धारावाहिक के निर्माण और प्रसारण के उद्देश्यों की पूर्ति करती है। निर्माताओं का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक लाभ प्राप्त करना होता है और वह तभी सम्भव है जब वह बिके। बिकने के लिए उसका मनोरंजक एवं पॉपुलर होना आवश्यक है ।

राही की सबसे बड़ी विषेशता यही कही जा सकती है कि वे ऐतिहासिक और पौराणिक चीजों को भी वर्तमान से जोड़ते हैं। 'महाभारत' में भी संवादों के माध्यम से नाटकीय उतार–चढ़ाव, टकराव, राजनीति, पारिवारिक सम्बन्धों की खींचतान को दिखाकर उन्होंने उसे आमजन के लिए पॉपुलर बनाया ।

राही का औपन्यासिक संसार पॉपुलर कल्चर के चिन्हों और विभिन्न स्तरों तथा उसके प्रभाव आदि को समेटता चलता है। यही नहीं, यहाँ उत्पादक शक्तियों के चरित्र और सत्ता वर्ग की बदलती शक्ति का सम्यक प्रस्तुतीकरण भी देखा जा सकता है। इसके लिए बदलती परिस्थितियाँ जिम्मेदार हैं। इन उपन्यासों में इस बदलती संरचना को भी सशक्त अभिव्यक्ति मिली है, जहॉ पारम्परिक मूल्यों की टूटन है। राही के उपन्यास साम्प्रदायिक मनोभूमि के निर्माण में पॉपुलर कल्चर के दुरूपयोग को भी कुछ सीमा तक दर्शाते हैं। यहाँ बढ़ता शहरीकरण एवं बढ़ती साक्षरता साम्प्रदायिकता को बढ़ाते हुए प्रतीत होते हैं ।

राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में संस्कृति के विविध रूप दिखाई देते हैं, जैसे–हिन्दुस्तानी संस्कृति, हिन्दू–संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, ऑचलिक संस्कृति और प्रतिरोध की संस्कृति। 'सीन–75' एवं 'दिल एक सादा कागज' में मुख्य रूप से पॉपुलर कल्चर से प्रभावित समाज की रूप रेखा मिलती है । अन्य उपन्यासों में पॉपुलर कल्चर के कुछ चिन्हों को देखा जा सकता है। राही मासूम रज़ा के उपन्यासों जैसे आधा गॉव, टोपी शुक्ला, कटरा–बी आर्ज़ू, हिम्मत जौनपुरी, सीन–75, दिल एक सादा कागज में पॉपुलर कल्चर के सन्दर्भ के साथ–साथ राही की भाषा को भी देखा जा सकता है । उनके साहित्यिक एवं फिल्म सम्बन्धी लेखन में पॉपुलर कल्चर की भाषा के तत्व मौजूद हैं, किन्तु यहॉ एक बात ध्यान देने योग्य है कि राही की भाषा विधाओं के साथ–साथ बदलती रही हैं। राही के साहित्य की भाषा संरचना अलग है, लेकिन उनके द्वारा लिखित धारावाहिकों एवं फिल्मों की भाषा उनके उपन्यासों से थोड़ी भिन्न हैं। विभिन्नता का कारण बाज़ार का दबाव और पाठकों एवं दर्शकों की रूचियॉ भी हैं। भूमण्डलीकरण के कारण बाज़ार, मीडिया और उपभोक्ता के बीच एक नया सम्बन्ध विकसित हुआ है। इसने पॉपुलर कल्चर को बढ़ावा दिया है। इस कल्चर के कारण भाषा में भी बदलाव आया है। धारावाहिकों में पॉपुलर कल्चर सीधे तौर पर विषय–वस्तु से नहीं जुड़ता है। राही ने उसे सहायक वातावरण के तौर पर प्रस्तुत किया है । इसका कारण भारतीय समाज की संस्कृति को वास्तविक रूप में दिखाना है। ये धारावाहिक माध्यम और लक्ष्य (दर्शक) को ध्यान में रखकर लिखे गए, इसलिए इनमें पॉपुलर कल्चर के चिन्हों को लेना पड़ता है। वस्तुतः राही ने भारतीय समाज और संस्कृति को ध्यान में रखते हुए पॉपुलर कल्चर का जबरदस्त मिश्रण किया है ।